HUMAN in the third millennium EDUCATION

Educating Humanity for the Third Millennium

A Global Declaration 2024

तीसरी सहस्राब्दी के लिए मानवीयता की शिक्षा

एक वैश्विक घोषणापत्र 2024

इस घोषणापत्र को विभिन्न कार्यक्षेत्रों और दुनिया के अलग-अलग इलाकों से जुड़े वैश्विक नेताओं का समर्थन मिला है।

दलाई लामा तेनजिन ग्यात्सो - नोबेल शांति पुरस्कार विजेता, तिब्बती मानवतावादी विचारक और आध्यात्मिक नेता तथा "एथिक्स फॉर द न्यू मिलेनियम", "बियॉन्ड रिलिजन: एथिक्स फॉर ए होल वर्ल्ड" सहित कई किताबों के लेखक।

"इस दुनिया को हम सभी के लिए एक बेहतर जगह बनाने की जिम्मेदारी इन्सान उठाएं, इसे समझाने में शिक्षा के महत्व पर यह घोषणापत्र उचित ही ध्यान देता है। आज अपने आस-पास जो समस्याएँ और हिंसा हम देखते हैं, वे समस्याएं बस इंसानों की पैदा की हुई नहीं है, बल्कि अक्सर उन्हें उन लोगों ने पैदा किया है जिन्हें हम शिक्षित मानते हैं। इससे पता चलता है कि हमारी मौजूदा शिक्षा प्रणाली में प्यार और स्नेह जैसे बुनियादी मानवीय मूल्यों की शिक्षा का अभाव है <...> मानवीय एकता के इस बोध के प्रति एक सकारात्मक रवैया विकसित करने की आवश्यकता है कि हम सभी एक मानव परिवार से जुड़े हैं।"

प्रोफेसर मैरी रॉबिन्सन - आयरलैंड की सातवीं राष्ट्रपति और पहली महिला राष्ट्रपति (1990-97); मानवाधिकारों के लिए संयुक्त राष्ट्र की पूर्व हाई कमिश्नर; और रियलाइजिंग राइट्स : द एथिकल ग्लोबलाइजेशन इनिशिएटिव की संस्थापक। नेल्सन मंडेला, ग्रासा माशेल, डेसमंड टूटू और अन्य लोगों के साथ मिलकर इन्होंने द एल्डर्स की स्थापना की। यह स्वतंत्र वैश्विक नेताओं का एक समूह है जो एक साथ मिलकर शांति, न्याय, मानवाधिकार और एक टिकाऊ पृथ्वी के लिए काम कर रहे हैं।

"अगर हमें पर्यावरणीय और सामाजिक तौर पर एक नई न्यायपूर्ण विश्व व्यवस्था का सह-निर्माण करना है, तो [यह घोषणापत्र] उन मूल्यों और सिद्धांतों का एक प्रेरक वक्तव्य है जिन्हें दुनिया भर में शिक्षा का हिस्सा होना चाहिए। <...> शिक्षा के मक़सद और व्यवहार पर पुनर्विचार के लिए शिक्षाविदों और राजनीतिक

नेताओं का [यह] आह्वान समयानुकूल है। यह हमें मानवीय चेतना को तराशने में शिक्षा की भूमिका से जुड़े चुनौतीपूर्ण सवालों का समाधान करने के लिए कहता है।... ऐसे बहुत कम वैश्विक संस्थान हैं जो लोगों को विश्व जलवायु और सामाजिक अन्याय पर काबू पाने के लिए सोचने और कार्य करने में सक्षम बनाने में इतना सकारात्मक प्रभाव डाल सकते हैं। फिर भी, अच्छाई फैलाने वाली एक सांस्कृतिक संस्था के रूप में शिक्षा की केंद्रीय भूमिका को कम करके आंका गया है।"

कैलाश सत्यार्थी - नोबेल शांति पुरस्कार विजेता, एक भारतीय समाज सुधारक जिन्होंने भारत में बाल मजदूरी के खिलाफ अभियान चलाया और शिक्षा के सार्वभौमिक अधिकार की वकालत की; बचपन बचाओ आंदोलन, ग्लोबल मार्च अगेंस्ट चाइल्ड लेबर, ग्लोबल कैंपेन फॉर एजुकेशन और कैलाश सत्यार्थी चिल्ड्रन फाउंडेशन सहित कई सामाजिक कार्यकर्ता संगठनों के संस्थापक।
"व्यापक असमानताओं और अनिश्चितताओं के मौजूदा समय में ध्रुवीकरण और टकराव से जूझ रहे हम लोगों को शिक्षा में क्रांतिकारी बदलाव करना होगा। ताकि अगली पीढ़ी को ऐसे मूल्य प्रदान किए जा सकें जो उन्हें हमारी बनाई इस जटिल दुनिया में आगे बढ़ने में मदद करें। हमें एक साथ चलना, एक साथ बात करना, एक साथ सोचना सीखना होगा <...> यह तभी संभव है जब हम शिक्षा की मदद से अपनी संवेदनाओं को कर्म में बदल दें। तीसरी सहस्राब्दी में मानवीयता की शिक्षा के लिए 2024 का यह वैश्विक घोषणापत्र एक व्यापक दस्तावेज है, जो समकालीन दुनिया की इन मांगों को पूरा करने के लिए शिक्षा प्रणाली में बदलाव की रूपरेखा को सटीक ढंग से बताता है।"

सारांश

यह घोषणापत्र 'ह्यूमन एजुकेशन इन थर्ड मिलेनियम' (तीसरी सहस्राब्दी में मानवता की शिक्षा) नामक अंतर्राष्ट्रीय पहलकदमी का नतीजा है। इसकी शुरुआत दुनिया भर के शिक्षाविदों और विचारकों ने की थी। ये शिक्षाविद और विचारक शैक्षिक नीतियों और व्यवस्थाओं में दिखाई दे रहे कुछ ख़ास रुझानों को लेकर

चिंतित थे। यांत्रिक दृष्टिकोण, सरकारों और व्यावसायिक संस्थानों का कठोर नियंत्रण, आलोचनात्मक चिंतन में गिरावट, शिक्षा को अर्थव्यवस्था के साथ जोड़ कर देखने की अनावश्यक प्रवृत्ति और शिक्षा संस्थानों व उनके सदस्यों पर जरूरत से ज्यादा प्रबंधकीय नियंत्रण जैसे रुझान चिंता का मुख्य विषय रहे हैं। इसका नतीजा है कि शिक्षा आज दुनिया की समस्याओं को हल करने में पर्याप्त सफल नहीं हो पा रही है और अपना सबसे महत्वपूर्ण काम नहीं कर पा रही है। उसका सबसे महत्वपूर्ण काम है समाज का निर्माण करने वाले समझदार लोगों को तैयार करने में मदद करना। लेकिन आज के हालात देखते हुए ऐसा लगता है कि शिक्षा नई समस्याएं खड़ी कर रही हो सकती है जिसकी जड़ें दुनिया की गंभीर समस्याओं के प्रति गहरी उदासीनता में हैं।

साल 2019 में धर्मशाला, भारत में एक राउंड टेबल कांफ्रेंस का आयोजन किया गया था। इस कांफ्रेंस में स्वयं दलाई लामा भी शामिल थे। कांफ्रेंस के बाद *ह्यूमेनाइज़िंग एजुकेशन इन द थर्ड मिलेनियम* नामक किताब भी प्रकाशित की गई। यह किताब स्प्रिंगर द्वारा 2022 में प्रकाशित की गई थी। सहभागियों के विचारों और कांफ्रेंस के मुख्य निष्कर्षों के आधार पर अंतर्राष्ट्रीय मसविदा समिति ने एक ड्राफ़्ट डिक्लेरेशन तैयार किया था। 2021-2023 में एशिया, यूरोप, अफ्रीका, उत्तरी अमेरिका, लैटिन अमेरिका और ओशियानिया में कई क्षेत्रीय राउंड टेबल कांफ्रेंस आयोजित की गईं। उनमें इस मसविदे का विश्लेषण किया गया। इन विश्लेषणों के दौरान ड्राफ्टिंग कमेटी में कई नए सदस्य शामिल किए गए। इसके फलस्वरूप, इस समिति में दुनिया भर के बहुत सारे देशों को प्रतिनिधित्व मिला और इस समिति ने मसविदे को अंतिम रूप दिया। लिहाजा, आज यह घोषणापत्र इस बारे में बहुत सारे शिक्षाविदों और विद्वानों के मतों और उम्मीदों का प्रतिनिधित्व करता है कि शिक्षा को किस तरह देखा जाना चाहिए और शिक्षा व्यवस्था में जो कमियां और खामियां दिखाई दे रही हैं उनको किस तरह दूर किया जा सकता है।

दुनिया भर में शिक्षा मुख्यतः किन समस्यायों और चुनौतियों का सामना कर रही है, इसका पता लगाना तथा शिक्षा के उद्देश्यों और मूल्यों के साथ-साथ अलग-अलग स्तरों पर शिक्षाशास्त्र के सामान्य सिद्धान्तों और संस्थागत पद्धतियों के बारे में सुझाव देना इस घोषणापत्र का मुख्य मक़सद है। यहां इस बात पर ध्यान दिया गया है कि तीसरी सहस्राब्दी में सामाजिक एवं राजनीतिक संकटों के संदर्भ में आर्टिफिशल इंटेलीजेंस और इस तरह की दूसरी तकनीकों के तेज़ विकास के युग में मनुष्य होने का क्या अर्थ है। साथ ही इस बात पर कि मानव सभ्यता का पृथ्वी और उसके समग्र परिवेश के साथ कैसा रिश्ता होना चाहिए।
इस घोषणापत्र की मुख्य चिंता है जीवन के प्रति इंसानों की जिम्मेदारी; और इसमें दूसरे मनुष्यों, से लेकर समाज, प्रकृति, पृथ्वी की सारी प्रजातियों समेत हर वह चीज शामिल है जिससे व्यक्ति जुड़ा हुआ है। इस नजरिये से मनुष्य होने के एक नए बोध की जरूरत है। इसके लिए आज हमें मैत्री, प्रेम और नैतिकता की शिक्षा की जरूरत है। हमें सामूहिकता, एकजुटता, सहअस्तित्व, लोकतंत्र और आलोचनात्मक चिंतन पैदा करने वाली शिक्षा की ज़रूरत है। राजनीतिज्ञों, व्यवसायियों, सांस्कृतिक और सार्वजनिक क्षेत्र की हस्तियों, मीडिया, परोपकारी संस्थानों और गैर-सरकारी संगठनों तथा शिक्षकों व शैक्षिक संस्थानों से आह्वान है कि शिक्षा के भविष्य को निर्धारित करने वाली इस सार्वजनिक बहस में वे भी बढ़-चढ़कर अपना योगदान दें। इस जिम्मेदारी से भागने का अब कोई विकल्प नहीं है क्योंकि आज पृथ्वी पर मौजूद समूचे जीवन का स्थायित्व और भविष्य दांव पर लगा हुआ है।

पृष्ठभूमि

इस तीसरी सहस्राब्दी ने ऐसी स्थितियां पैदा की हैं, जहाँ तमाम बड़े इंसानी और गैर-इंसानी ईकोसिस्टम एक-दूसरे पर निर्भर हैं, जीवन में जबर्दस्त अनिश्चितता है और हम वैश्विक संकटों से जूझ रहे हैं। पृथ्वी और समाजों के सामने पैदा हो रहे साझा संकटों की वजह से आज हमें शिक्षा और उसकी भूमिका पर भी नए ढंग

से सोचने की जरूरत है। ऐसे में शिक्षाविदों के रूप में हमारे ऊपर यह जिम्मेदारी है कि मानवीयता की शिक्षा की एक नई अवधारणा तैयार करें।

"मानवीयता" को इंसानों के अलग-अलग पहलुओं और शिक्षा में समाज की मौजूदगी के रूप में समझना होगा। इसे अर्थव्यवस्था और तकनीक के सीमित दायरे में कतई नहीं देखा जाना चाहिए। 'शिक्षा' का मतलब बाजार में खरीदी-बेची जाने वाली सेवा नहीं है। इसके उलट, यह मौलिक मानवाधिकार तथा टिकाऊ, समावेशी और न्यायसंगत विकास (यूनेस्को की परिभाषाओं के अनुरूप) की आधारशिला है। इसके साथ ही, मानवीयता की शिक्षा में मनुष्य को ब्रह्मांड के केंद्र में नहीं रखा जाएगा बल्कि उसके केंद्र में इंसानों की जिम्मेदारियां और मानवीयता होनी चाहिए।

गौरतलब है कि आज शिक्षा पर राजनीतिक समुदाय का मज़बूत वर्चस्व बना हुआ है। राजनीतिज्ञ अकसर मानव समाज को विभाजित करने की कोशिश करते हैं। खासतौर से, शिक्षा के जरिए और शिक्षा में लोगों को एक-दूसरे के सामने खड़ा करने की कोशिश करते हैं। इसके विपरीत, हमें एकजुटता की आवश्यकता है और शिक्षा पर अपने बुनियादी नज़रियों के लिहाज से हम यहाँ एकजुट हैं। एक तरफ मनुष्य समस्याओं को जन्म देते हैं, ख़ासकर अपने व्यक्तिगत, कॉरपोरेट और सामूहिक स्वार्थ के दबाव में आकर। वहीं दूसरी तरफ़, वे अपनी सामर्थ्य और इंसानियत के प्रति अपनी प्रतिबद्धता के कारण समस्याओं को हल भी कर सकते हैं। इस समाधान की खोज में योगदान देना शिक्षा की जिम्मेदारी है। अब यह जिम्मेदारी पहले से कहीं ज्यादा है। हमारा मानना है कि नए किस्म के शैक्षणिक संस्थान, पाठ्यक्रम और शिक्षाशास्त्र आज मानवता, मानव समाज और हमारी पृथ्वी के सामने पैदा हो रही चुनौतियों से निपटने में मदद दे सकते हैं।

अवलोकन

1. शिक्षा का मौजूदा स्वरूप काफी हद तक मनुष्य को एक आर्थिक प्राणी के रूप में देखने की धारणा से प्रभावित है। इस वजह से दूसरे मानवीय पहलुओं का अवमूल्यन हो जाता है। यह शिक्षा को मनुष्य के विकास और मानवता के कल्याण के लिए उत्तरदायी समुदाय के निर्माण के मक़सद से अलग एक तटस्थ और गैर-राजनीतिक चीज बना देता है।
2. दुनिया भर की शिक्षा नीतियों में प्रबंधनवादी, व्यावसायिक और सरकारी विचारधाराओं का बोलबाला बढ़ता जा रहा है। इसकी वजह से शिक्षकों और शिक्षाविदों की पेशेवर और अकादमिक स्वायत्तता खत्म हो रही है। अध्यापकों और विद्यार्थियों को सप्लायर और उपभोक्ता की भूमिका तक सीमित कर दिया जा रहा है। इसका एक नतीजा ये है कि प्रदर्शन प्रबंधन के साथ-साथ तरह-तरह की परीक्षाओं और मूल्यांकनों को केंद्रीय महत्व दिया जाने लगा है। साथ ही, तकनीकी कसौटियों पर आधारित कुशलता और निगरानी केंद्रित उत्तरदायित्व संरचनाओं पर जोर दिया जाने लगा है।
3. व्यावसायिक नफा-नुकसान पर केंद्रित विज्ञान, प्रौद्योगिकी, इंजीनियरिंग और गणित (साइंस, टेक्नोलॉजी, इंजीनियरिंग, मैथमेटिक्स- स्टैम सब्जेक्ट्स) पर बहुत ज्यादा जोर देने की वजह से शिक्षा में मानविकी और समाज विज्ञानों के क्षेत्र में संकट पैदा हुआ है। इस वजह से समाज और लोगों की जिंदगी पर ध्यान घटता चला जा रहा है।
4. राष्ट्र-राज्यों ने अध्यापकों और विद्यार्थियों, स्कूलों और विश्वविद्यालयों की स्वतंत्रता के दायरे को सीमित कर दिया है। शिक्षकों और शिक्षाविदों के पास जो सीमित स्वतंत्रता उपलब्ध है उसका भी उपयोग वे हमेशा नहीं कर पाते हैं। आज की शिक्षा व्यवस्था में पहलकदमी की जगह अनुपालन को प्रोत्साहन किया जा रहा है। शिक्षा के इस चरित्र को फौरन बदलने की जरूरत है;

5. शिक्षा व्यवस्था अक्सर ऐसे मूल्य नहीं प्रदर्शित करती जो दूसरों के प्रति नफरत, हिंसा, राष्ट्रवाद और युद्ध का विरोध करते हों, बल्कि इसके उलट, कभी-कभी वह ऐसी प्रवृत्तियों को बढ़ावा देती दिखाई देती है;
6. लोकलुभावनवादी राजनीति का उभार लोगों को अकसर षड्यंत्र की कहानियों, अंधराष्ट्रवाद और दूसरों के मुकाबले अपने आपको श्रेष्ठ मानने की प्रवृत्तियों का शिकार बना देता है। इससे समाज में विभाजन और टकराव पैदा हो रहा है;
7. टकरावों, नफरत भरे प्रचार, मिथकों और विचारधाराओं से मुनाफा कमाने वाले मीडिया संस्थान देशों के भीतर और देशों के बीच तरह-तरह की हिंसा और टकरावों को बढ़ाने की भूमिका निभा रहे हैं;
8. राजनीतिक अज्ञानता तथा लोकतंत्र के प्रति अनभिज्ञता से लोकतांत्रिक सिद्धांत और संस्थान कमजोर पड़ते चले जा रहे हैं। साथ ही, बहुत सारे समाजों में निरंकुशतावादी प्रवृत्तियां बढ़ती चली जा रही हैं;
9. शिक्षा व्यवस्थाएं लोगों को इस बात के लिए पर्याप्त रूप से तैयार नहीं करतीं कि वे दुनिया के हालात पर सवाल उठाएं, बल्कि शिक्षा व्यवस्था नियंत्रित व्यक्ति तैयार करने में लगी हुई हैं;
10. बुनियादी मानव मूल्यों, नैतिकता और परस्पर फिक्रमंदी पर जोर न दे पाने के पीछे एक हद तक इस बात का भी हाथ है कि शिक्षा मुख्य रूप से यांत्रिक उद्देश्यों पर टिकी है;
11. शिक्षा का बड़ा हिस्सा वायुमंडलीय एवं पारिस्थिकीय संकटों को हल नहीं कर पा रहा है। यह विद्यार्थियों को यह नहीं समझा पा रहा है कि मानव-केन्द्रित सभ्यता किस तरह दूसरी प्रजातियों और समूची प्रकृति को नष्ट करती जा रही है। इसके कारण पृथ्वी रहने के लिए अनुपयुक्त जगह बनती जा रही है;
12. दुनिया के बहुत सारे भागों में सांस्कृतिक और आर्थिक उपनिवेशीकरण आज भी जारी है। इस उपनिवेशीकरण के भाषायी और

दूसरे लक्षण शिक्षा में भी साफ दिखाई देते हैं। तर्कवाद और वैज्ञानिक तर्कशीलता जैसे ज्ञानोदय के मूल्यों से उपजी वैश्विक संस्कृति हाल ही में आर्थिक तर्कशीलता को तरजीह देने लगी है और आर्थिक तर्कशीलता ही प्रगति का मुख्य संचालक बन गई है। इस तरह के मूल्यों से लैस शिक्षा बेहद व्यक्तिवादी, वर्तमान-केंद्रित बन गई है जिसमें एक ऐसी यांत्रिक तर्कशीलता है जो मनुष्यों को गैर-मनुष्यों की दुनिया से अलग कर देती है। वैज्ञानिक तर्क के अलावा इसमें आदर्शों से प्रेरित अर्थ और मानवता व पृथ्वी के बीच स्थाई अंतर्निभरता का अभाव है। ये उन देशज और प्रारंभिक सांस्कृतिक परंपराओं के भी मूल्य हैं, जो समुदाय, प्रकृति, भावनाओं और परस्पर फिक्रमंदी पर जोर देती रही हैं।

मुख्य चिंताएं

I. मनुष्य, समाज, दुनिया और शिक्षा के उद्देश्य

13. मनुष्य और समाज की निहित या व्यक्त अवधारणाओं के बिना शिक्षा की कोई कल्पना नहीं की जा सकती;

14. सार्वभौमिक मानवीय विशेषताओं और क्षमताओं का पता लगाने और उसे विकसित करने साथ ही अपनी व्यक्तिगत पहचान का विकास करने में प्रत्येक मनुष्य की मदद करना शिक्षा का एक महत्वपूर्ण लक्ष्य है;

15. दूसरों के अस्तित्व के स्वीकार से अपनी अंतर्निहित मानवीय गरिमा का एहसास करने और अपनी मौलिक आजादी का इस्तेमाल करने में विद्यार्थियों को सक्षम बनाना शिक्षा का काम होना चाहिए;

16. आज न केवल इस बात की पुष्टि करना जरूरी है कि हम कौन हैं, बल्कि हम क्या नहीं हैं इसका सामना करना और हमारी अस्मिताओं (Identities) को आकार देने की कोशिश करने वाले विभिन्न (राजनीतिक, आर्थिक, सूचनात्मक, सांस्कृतिक, जैव-राजनीतिक) प्रभावों को पहचानना भी हमारी जिम्मेदारी है। ‘इन्सान होने का क्या मतलब है?’; ‘हम किस तरह

की मानवीयता का विकास कर रहे हैं?' जैसे सवालों के महत्त्व को समझने और उन सवालों को जीवित रखने में मदद करना शिक्षा का काम है, क्योंकि मनुष्य की क्षमताएं अनंत हैं;

17. शिक्षा को अब उस उत्तरमानवीय युग (Post-Human Era) की चुनौतियों से भी जूझना होगा जो मनुष्य की अवधारणा में क्रांतिकारी बदलाव ला रहा है, खासकर चौथी औद्योगिक क्रांति, सोशल मीडिया और आर्टिफिशियल इंटेलीजेंस के कारण। आर्टिफिशियल इंटेलीजेंस है तो इंसान की ही रचना, मगर इसके बारे में हम मनुष्यों को कुछ बहुत ज़रूरी रणनीतिक फैसले लेने होंगे और साथ ही इसे नैतिक कसौटियों पर परखना होगा। आज ये बात और भी ज्यादा महत्वपूर्ण हो उठी है कि हम तकनीकी दुनिया के संदर्भ में इंसानी अस्मिता को पहचानें और उस पर जोर दें। साथ ही, तमाम दूसरे जीवों और पूरी पृथ्वी के साथ एक नए रिश्ते की कल्पना करें;

18. मनुष्य होने का एक मतलब ये भी है कि हम इस बात पर ध्यान दें कि मनुष्य होने का क्या मतलब है। लोगों की जरूरतों, आकांक्षाओं और उनके सघर्षों को जानें। यही आनंद या मानव सफलता और जीवन की सार्थकता है। इसी से शैक्षिक आदर्श पैदा होते हैं, जो इंसानों की अपनी स्वायत्तता और मानव-संबंधों के नतीजे में पैदा होने वाली इंसानियत पर आधारित होते हैं। ये आदर्श निजी आत्मनिर्णय तथा मूल्यों, परस्पर संबंधों, हमदर्दी और फिक्रमंदी से जुड़े हैं;

19. सामान्य तौर पर शिक्षा को मुख्यतः सेक्युलर होना चाहिए। लेकिन एक नैतिक और आध्यात्मिक रूप से समृद्ध आंतरिक जीवन के लिए उसे इंसानी ज़रूरतों से भी जुड़ा होना चाहिए। ऐसा जीवन जिसमें खुद को समझना, खुद को बदलना, अपनी सीमाओं से परे जाना और दूसरों के प्रति एक बुनियादी खुलापन शामिल हो। लिहाजा, हमें ये सुनिश्चित करना होगा

कि मनुष्य विभिन्न प्रकार की सीमाओं को पार कर सकें, खासतौर से आध्यात्मिक सीमाओं को;

20. मनुष्य पूरी तरह स्वार्थी नहीं होते, जैसा कि होमो इकोनोमिकस की धारणा से कभी-कभार लगता है बल्कि वे परोपकारी भी हो सकते हैं। परिपक्वता की पहचान के तौर पर निःस्वार्स्थता को समझने और यह देखने में शिक्षा को मददगार होना चाहिए कि किस तरह इन्सान जीने के लिए एक-दूसरे पर निर्भर हैं और अपनी कमजोरियां तथा देखभाल की अपनी जरूरत जाहिर करते हैं। सवाल चाहे निजी हो, राष्ट्रीय हो या क्षेत्रीय हो, शिक्षा को बढ़ावा देना चाहिए कि हम अपने स्वार्थी और व्यक्ति-केंद्रित संकीर्ण दायरे से बाहर निकलें;

21. विद्यार्थियों के सामने दुनिया को एक सजीव चीज के तौर पर पेश करना चाहिए। दुनिया जो चुनौतियों के साथ-साथ संभावनाओं से भी भरी है। विद्यार्थियों को इस योग्य बनाना चाहिए कि वे दुनिया के साथ संबंधों को, उसमें अपनी जगह को और उसके लिए इंसानों की जिम्मेदारी को पहचान सकें;

22. आज जब दुनिया से बहुत सारी प्रजातियां खत्म होती जा रही हैं, जब मानव जीवन को कामय रखने की क्षमता वाला पर्यावरण खतरे में है, तब बहुप्रजातीय न्याय और पृथ्वी के भविष्य के प्रति संवेदशील इंसानों को तैयार करना बहुत जरूरी हो जाता है। लिहाजा, पूरी पृथ्वी के लिए स्थानीय और वैश्विक स्तर पर साझा स्वामित्व और अपनेपन का भाव विकसित करना शिक्षा का मुख्य उद्देश्य बन जाता है;

23. शिक्षा की आवश्यकता प्रत्येक व्यक्ति और प्रत्येक समाज को है। लिहाजा शिक्षा एक साझी जिम्मेदारी भी है। शिक्षा के उद्दश्यों और शिक्षा नीतियों को निर्धारित करने में नागरिक समाज, टीचर यूनियन्स, शैक्षिक संगठनों और विविध समुदायों की महत्वपूर्ण भूमिका है;

24. शिक्षा एक ऐसा सामाजिक संस्थान है जो विद्यार्थियों को एक साझी दुनिया में हिस्सेदार बनाता है। लिहाजा, शिक्षा व्यवस्था को सामाजिक न्याय की गुंजाइश पैदा करनी चाहिए, खासतौर पर हाशिए पर ढकेल दिए गए समुदायों और असुरक्षित समूहों के लिए;

25. इसे विद्यार्थियों को ऐसे शिक्षित व्यक्ति के आदर्श के लिए प्रेरित करना चाहिए जो सामाजिक न्याय को बढ़ाने में योगदान दे। इसका अर्थ है शिक्षा जन सेवा के लिए लोगों को तैयार करे, खासतौर पर नेतृत्वकारी भूमिकाओं में, निजी फायदे के लिए नहीं बल्कि सेवा करने के लिए।

26. चूँकि शिक्षा अपने स्वभाव और प्रभाव में सामाजिक है इसलिए सामाजिक सदस्यों के रूप में विद्यार्थियों को परिपक्व बनाना शिक्षा का बुनियादी लक्ष्य हो जाता है। शिक्षा का लक्ष्य ये होना चाहिए कि वह विद्यार्थियों को सार्वजनिक जीवन में नीति-निर्माताओं के साथ और उनके समान भाग लेने वाले नागरिकों के रूप में तैयार करे;

27. लोकतंत्र के विचार में निरंकुशता को रोकने के साथ-साथ मतभेदों के प्रति बुनियादी सम्मान रखने वाली समावेशी और सामाजिक रूप से न्यायसंगत शासन व्यवस्था को साकार करना शामिल है। सांस्कृतिक लोकतंत्र इसका एक अभिन्न हिस्सा है। लोकतांत्रिक एवं आलोचनात्मक नागरिकता की शिक्षा का मतलब है लोगों को एक-दूसरे के साथ, लचीले ढंग से और एक-दूसरे की भिन्नताओं का सम्मान करते हुए जीना सिखाना।

28. शिक्षा व्यवस्थाएं सरकारों और राज्य नीतियों के अनुसार ढली होती हैं मगर वास्तव में उनकी सीमाएं और समयावधि बहुत विस्तृत होती है। शिक्षा का काम भावी पीढ़ियों को तैयार करना है। इसका एक अर्थ यह है कि अब तक के साझा अनुभवों को समझना और उनका इस्तेमाल करना। वहीं दूसरी तरफ बेहतरी के लिए बदलाव यानि साझी कल्पना पर आधारित भविष्य की तैयारी की जाए। इस प्रकार, शिक्षा का अर्थ मौजूदा स्थितियों को

पुनरुत्पादित करना नहीं बल्कि आलोचनात्मक नज़रिये और बदलाव के बारे में सिखाना है;

29. उच्च शिक्षा की विशेष जिम्मेदारी है कि वो जटिल मामलों को हल करने में समाजों की मदद करे और स्वीकृत तौर-तरीकों और रूपरेखाओं पर सवाल उठाए;

30. शिक्षा, खासतौर से उच्च शिक्षा सरकारी नीतियों को आगे बढ़ाने के लिए नहीं इस्तेमाल होनी चाहिए। इसके उलट, उसे ऐसी स्वायत्त जगह होना जाना चाहिए जहां सरकारी नीतियों की पड़ताल और विश्लेषण किया जाए। खासतौर से मानवाधिकारों को प्रभावित करने वाली नीतियों की पड़ताल;

31. मानव अस्तित्व की समस्याओं के मुख्य स्रोतों में से एक है - दूसरे को नुकसान पहुँचाने के मकसद से हिंसा। मनुष्यों को एक साथ रहना सीखना होगा। लिहाजा, शिक्षा का एक बहुत महत्वपूर्ण उद्देश्य यह पता लगाना है कि व्यक्तियों, समूहों और लोगों के बीच टकराव कैसे पैदा होते हैं। इसके अलावा लोगों को शांतिपूर्ण सहअस्तित्व के साथ जीना सिखाना और अपनी आकांक्षाओं और नज़रियों में टकराव के बावजूद एक-दूसरे को समझने के लिए प्रेरित करना भी शिक्षा का उद्देश्य है;

32. किसी व्यक्ति को शिक्षित करने के लिए जरूरी है कि शैक्षिक लक्ष्यों में न केवल आलोचनात्मक क्षमताओं और दुनिया के प्रमाणित वस्तुनिष्ठ ब्यौरों पर सवाल खड़ा करने की आदत का विकास किया जाए, बल्कि मानव रिश्तों, आकांक्षाओं, भावनाओं और सोच के व्यक्तिपरक पहलुओं की समझ और उनके प्रति हमदर्दी का रवैया भी विकसित किया जाए।

लिहाजा, न केवल अर्जित ज्ञान और कौशलों में बढ़ोत्तरी करना, बल्कि मुख्यतः व्यक्ति के रूप में विद्यार्थी का विकास करना शिक्षा का मुख्य मक़सद है। इसके लिए समूचे व्यक्तित्व के विकास की आवश्यकता होती है। खासतौर पर दुनिया और समाज की फिक्रमंदी का नजरिया विकसित करना और उसके लिए प्रेरित करना।

लगातार खुद को बेहतर बनाने (आत्म-नियंत्रण और आत्म-संगठन) के लिए विद्यार्थियों को तैयार करना शिक्षा का उद्देश्य है। इसका मतलब उन्हें दूसरों के साथ शांतिपूर्वक रहने में सक्षम बनाना (अहिंसा), अपनी, अपने समाज की और दुनिया की जिम्मेदारी लेने (दायित्व की नैतिकता) और सामाजिक, नागरिक और पेशेवर गुणों के जरिये इस जिम्मेदारी को निभाने के योग्य बनाना।

II. मानवीय शिक्षा की रूपरेखा

- **सिद्धांत**

शिक्षा एक गंभीर और व्यापक विकास प्रक्रिया की मांग करती है, जिसका आधार यह है कि तीसरी सहस्राब्दी की शुरुआत के साथ कौन सी चीजें महत्वपूर्ण है। इन चीजों में पृथ्वी पर मौजूद जीवन और प्रकृति, संचार और समुदाय, पहचान (खासतौर से सांस्कृतिक पहचान), सुरक्षा, स्वास्थ्य, भावनाएं और आत्माभिव्यक्ति, रचनात्मक गतिविधि, विज्ञान और तकनीक शामिल हैं। शिक्षा को पूरी तरह से पारिस्थितिकीय होना चाहिए जो सभी पहलुओं से जुड़ी हो। इसे मानवीय और लोकतांत्रिक होना चाहिए तथा मानवाधिकारों का सम्मान करना चाहिए। साथ ही, शिक्षा को जीवन की सुरक्षा, स्वास्थ्य और शरीर, सामाजिक, आध्यात्मिक, भावनात्मक और सौंदर्य संबंधी आवश्यकताओं के प्रति चौकस होना चाहिए और नैतिकता को बहुत प्राथमिकता देनी चाहिए।

सिद्धांतों के नज़रिये से शिक्षकों की जिम्मेदारी है कि:

33. विद्यार्थियों को इस योग्य बनाएं कि वे मानवीय विविधता को ध्यान में रखते हुए मनुष्य होने के अर्थ को समझें, दूसरों के साथ (प्राकृतिक दुनिया में सभी सहित) और अपने साथ भी जुड़ पाएं और एक अर्थपूर्ण जीवन जी सकें। इसके लिए जरूरी है कि:

- विद्यार्थी के भीतर मुद्दों की अपनी समझ विकसित की जाए। ऐसी समझ का विकसित होना शिक्षा के लिए बहुत ज़रूरी है। इसके लिए अंतर्विषयक शैक्षिक पद्धतियों का इस्तेमाल करना होगा। इसके लिए

चली आ रही शिक्षा और कौशलों से आगे बढ़कर एक परिपूर्ण मानवीय शिक्षा की नींव रखनी होगी। विद्यार्थियों को अपनी आकांक्षाओं, शरीर और भावनाओं के प्रति सचेत करना होगा। उन्हें हमदर्दी, अंतर्दृष्टि, कल्पनाशीलता और रचनाशीलता से लैस करना होगा। उनमें संबंधों, मूल्यों, नैतिकता और ज़िम्मेदारी की भावना निर्मित करनी होगी। इनकी मदद से विद्यार्थियों को सार्वजनिक और निजी, दोनों स्तरों पर कई दिशाओं में काम करने के लिए तैयार किया जाए।

- मानविकी और समाज विज्ञानों को फिर से उनके महत्त्वपूर्ण स्थान पर बहाल किया जाना चाहिए। मानवता की समझने के लिए शिक्षा में मशीनों और ऑपरेटिंग सिस्टम्स जैसी खांचाबद्ध रूपरेखाएँ नहीं अपनानी चाहिए। इसकी बजाय विद्यार्थियों को तकनीक की भूमिका और प्रभावों को पहचानने तथा तकनीक के प्रति एक अर्थपूर्ण दृष्टिकोण अपनाने योग्य बनाना चाहिए। मानवीय शिक्षा ऐसी होनी चाहिए जो डिजिटल परिवेश को भी मानवीय बनाए।
- अपने अनूठे जीवन की कीमत और क्षमताओं पर विश्वास करने में विद्यार्थियों की मदद करना और कठिनाइयों, दुख-दर्द और मृत्यु जैसी स्थितियों का सामना करने के लिए हिम्मत पैदा करना।
- विद्यार्थियों के भीतर स्वायत्तता की भावना को प्रोत्साहित किया जाए और उन्हें ऐसी गतिविधियों से जोड़ा जाए जिनसे वे खुद को जान पाएं;
- दूसरों के प्रति दोस्ताना रवैया रखने और सम्मान करने के साथ-साथ दुनिया में किसी चीज़ और किसी व्यक्ति से प्रेम करने की ऐसी क्षमता विकसित करना, जिससे हमारे और दुनिया के बीच मौजूद पारस्परिक सम्बन्ध जाहिर होते हैं;

34. सारी दुनिया को शिक्षित करें। इसके लिए पारस्परिक निर्भरता का एक विजन, समझदारी भरी साझी जिम्मेदारी का एक नैतिक बोध, प्रकृति

के साथ सौहार्दपूर्ण रिश्ता रखने वाली देशी संस्कृतियों समेत विविध परंपराओं में उपलब्ध ज्ञान को आत्मसात करने की चेतना भी जरूरी है;

35. अमन पसंद संस्कृति पर आधारित बेहतर दुनिया के आदर्श प्रस्तुत करें।

अगर कहीं टकराव होता है, तो ऐसी स्थिति में आक्रामकता और हिंसा के औचित्य पर सवाल खड़े करें, विरोधों को कम करने की कोशिश करें तमाम भिन्नताओं के बावजूद मानवीय समानता और दूसरों के साथ पारस्परिक जुड़ाव के आधार पर व्यक्तियों और समुदायों को शांतिपूर्ण ढंग से साथ रहना सिखाएं;

36. लोकतांत्रिक कायदे-कानूनों और मूल्यों के प्रति समर्पित आलोचनात्मक और जिम्मेदार नागरिक तैयार करें। इसका मतलब है कि जीने, रिश्ते बनाने और सोचने के एक तरीके के रूप में लोकतंत्र को पढ़ाना और बरतना;

37. विद्यार्थियों को सिर्फ़ 'आलोचनात्मक चिंतन का कौशल' ही न सिखाया जाए, बल्कि सम्पूर्ण अर्थों में आलोचनात्मकता का विकास किया जाए। इसका मतलब है कि विद्यार्थियों में यथास्थिति पर सवाल उठाने, विभिन्न प्रकार के मूल्यों पर विचार करने और उन्हें चुनौती देने के लिए प्रेरित किया जाए। साथ ही दुनिया में व्यापक तौर पर प्रचारित छवियों का विश्लेषण करने की क्षमता विकसित की जाए;

38. इस तथ्य पर ध्यान दें कि अब कई विद्यार्थी संसाधनों की कमी से नहीं बल्कि संसाधनों, खासकर सूचनाओं की अधिकता से जूझ रहे हैं। विद्यार्थियों को महत्त्वपूर्ण और महत्वहीन के बीच फ़र्क करना; अपने अर्थ निकालना; सूचना, ज्ञान और व्यावहारिक विवेक के बीच, झूठ और सच के बीच फर्क करना सिखाएं। सच का सम्मान करने और उसके पक्ष में खड़े होना सिखाएं;

39. शिक्षा में और शिक्षा के ज़रिए सभी के लिए नस्ली समानता, जेंडर समानता, सामाजिक समानता को प्रोत्साहित किया जाए, ख़ासतौर पर

जातीय, नृजातीय, प्रवासी, अल्पसंख्यक, गरीब, विकलांग आदि हाशिये पर पड़े समुदायों और असुरक्षित समूहों के लिए;

40. लोगों की ज़िंदगी और उनके सांस्कृतिक तथा प्राकृतिक वातावरण के लिहाज से शिक्षा को प्रासंगिक बनाया जाए। उसे स्थानीय समुदायों की असली समस्याओं से जोड़ा जाए;

41. भाषाओं एवं लिपियों की विविधता को बचाएं और बच्चों की घरेलू भाषा को उनकी पढ़ाई का आधार बनाएं। इसके अलावा द्विभाषी या बहुभाषी शिक्षा प्रदान करें और आज की परस्पर जुड़ी हुई दुनिया के लिए तकनीकी अनुवाद की प्रणाली उपलब्ध कराएं;

42. बातचीत करने लायक सहयोगी माहौल तैयार करें। जो कुछ मान लिया गया है उसके आगे जाकर छानबीन करने, अनुसंधान करने, सवाल पूछने, जिज्ञासु बनने और स्वीकृत चीजों के परे सोचने-देखने की प्रवृति पैदा करें। इसके साथ ही आत्मालोचना, आत्मचिंतन, और उन्मुक्तता को बढ़ावा दें, दूसरों की भिन्नताओं को सराहना सिखाएं;

43. बच्चे बड़ों का नजरिया स्वीकारें सिर्फ इसे ही बढ़ावा मत दीजिए, यह भी सिखाइए कि बच्चों के दृष्टिकोण को बड़े समझें, उसे स्वीकारें। पीढ़ियों के बीच संवाद को बढ़ावा दीजिए;

सांगठनिक आयाम

44. आज दुनिया भर में डी-स्कूलिंग और गैर-स्कूली शिक्षा की अलग-अलग पद्धतियाँ तेज़ी से फैल रही हैं। लेकिन, स्कूलिंग को एक ऐसी सार्वजनिक व्यवस्था के रूप में देखा जाना चाहिए, जो शिक्षा को सभी तक पहुंचाना सुनिश्चित करती है और साथ ही समाजीकरण का एक जरिया है;

45. शैक्षिक प्रणालियों को ऐसे स्थानीय और वैश्विक मंच स्थापित करने चाहिए जिनके माध्यम से ये जाना जा सके कि बच्चे और युवा, स्कूलों और वयस्कों की दुनिया के बारे में क्या सोचते हैं;

46. स्कूलों और विश्वविद्यालयों का खर्च मुख्यतः सरकार को उठाना चाहिए। इसकी निगरानी ऐसी संस्थाओं को करनी चाहिए जो अध्यापकों, विद्यार्थियों, परिवारों और समुदायों के हितों के प्रति लोकतांत्रिक ढंग से जवाबदेह हों;

47. हमें ऐसे शिक्षा संस्थानों और नए संस्थानिक रूपों की जरूरत है जो मशीनी पहलुओं की बजाए मानवीय पहलुओं को प्राथमिकता देते हुए शिक्षा के वास्तविक और गंभीर लक्ष्यों को साकार कर सकें;

48. शिक्षकों पर डाले जा रहे काम के बोझ और अतिरिक्त जवाबदेही पर शिक्षा नीतियों को ध्यान देना चाहिए और उन्हें घटाना चाहिए। इसके अलावा, शिक्षा नीतियों में शिक्षकों और नागरिक समाज की आवाजें शामिल होनी चाहिए। शिक्षकों और प्रशासकों को एक-दूसरे के प्रति जवाबदेह होना चाहिए। स्कूल, विश्वविद्यालय और अध्यापक सभी अपने आप में विशिष्ट हैं और उनका महत्त्व उनकी रेटिंग और अतिसरलीकृत कसौटियों की बजाय उनकी विशिष्टताओं के लिए होता है;

49. अध्यापक शिक्षा संस्थानों का महत्वपूर्ण हिस्सा होते हैं। ये वे लोग हैं जो जानते हैं कि मनुष्य होने का अर्थ क्या है, जो विद्यार्थियों को प्रेरित कर सकते हैं। शिक्षा नीतियों के माध्यम से अध्यापकों की प्रतिबद्धता और समर्पण को प्रोत्साहित किया जाना चाहिए, क्योंकि ऐसे संवेदनशील और महत्त्वपूर्ण काम को पूरा करने के लिए बहुत गंभीर पेशेवर रवैये की ज़रूरत है। एक पेशेवर व्यवसाय के रूप में शिक्षक-शिक्षा का उद्देश्य अध्यापकों में खुलेपन, संवाद, कल्पनाशीलता, समीक्षा और चिंतन की क्षमता विकसित करना होना चाहिए। साथ ही, शिक्षक-शिक्षा से अध्यापकों में निजी अर्थ और मूल्यों की खोज को भी प्रोत्साहित किया जाना चाहिए;

50. अध्यापकों को सम्मान, भरोसे, पर्याप्त वेतन, शांतिपूर्ण जीवन और उनके काम की जगह पर सुरक्षा की जरूरत होती है। प्रबंधकों को

पारस्परिक सम्मान, पारदर्शिता और सहायक रवैया अपनाना चाहिए, ताकि अध्यापकों का आगे बढ़ना सुनिश्चित हो सके;

51. शिक्षा में स्वायत्तता के लक्ष्यों को केवल तभी साकार किया जा सकता है, जब स्वायत्त और लोकतांत्रिक रूप से चलने वाले संस्थानों में खुद अध्यापकों को स्वायत्तता और पेशेवर स्वतंत्रता दी जाएगी। शिक्षा व्यवस्थाओं को इस बात को समझना और बढ़ावा देना चाहिए कि शिक्षक बदलाव के माध्यम हैं। शैक्षिक पेशेवरों और अध्ययनकर्ताओं को पाठ्यक्रम और शिक्षाशास्त्रीय पद्धतियों के विकास में सक्रिय भूमिका अदा करने का अधिकार दिया जाना चाहिए;

52. शैक्षिक मूल्यों के बल पर कायम हुई शिक्षकों की पेशेवर एकजुटता बहुत महत्त्वपूर्ण है। अध्यापकों और उनके पेशेवर समुदायों को इन मूल्यों के रक्षकों के रूप में मदद और प्रोत्साहन दिया जाना चाहिए। शिक्षक-शिक्षा को ऐसा दृष्टिकोण अपनाने की जरूरत है जिसके तहत कमज़ोर लोकतांत्रिक व्यवस्थाओं वाले देशों में भी ऐसे अध्यापक तैयार हों, जो प्राप्त स्वतंत्रता के दायरे के भीतर रहते हुए सोच सकें, सोचना और यथास्थिति पर सवाल उठाना सिखा सकें;

53. शिक्षा संस्थानों को नागरिक समाज संगठनों, खासकर मानवाधिकार एवं पर्यावरण के क्षेत्र में काम करने वाले गैर-सरकारी संगठनों के साथ मिलकर काम करना चाहिए।

अध्यापकों, विद्यार्थियों और अन्य सदस्यों के संबंधात्मक आयामों का मतलब है कि:

54. बच्चों और युवाओं को अनूठे, चिंतनशील और भावुक व्यक्ति के रूप में देखना और उनके चुनाव और उनकी पहचान को स्वीकार करना;

55. अनावश्यक प्रबंधकीय अनुशासन का शिकार बनाए बिना अध्यापक समुदाय का सम्मान करना, माता-पिता के साथ सहयोग करना और उन तमाम वयस्कों की अंतः प्रेरणा पर ध्यान देना जो बच्चों की शिक्षा की ज़िम्मेदारी जिम्मेदारी उठाते हैं;

56. पढ़ने-पढ़ाने का एक ऐसा मुक्त और पदानुक्रम विहीन माहौल जो आपसी सहयोग और संवाद तथा विद्यार्थियों के विचारों से पहचाना जाए;

57. विद्यार्थियों और अध्यापकों की भावनाओं को महत्त्व देने वाले शिक्षाशास्त्रीय व्यवहारों के विकास के अनिवार्य पहलू के तौर पर एक दूसरे के प्रति संवेदना और सराहना का भाव होना;

58. विद्यार्थियों के विकास की प्रक्रिया में उनकी विशेषताओं और उनके सामने आने वाली कठिनाइयों पर ध्यान देना, ख़ासतौर पर समाज में घटित होती स्थितियों के सन्दर्भ में;

शैक्षिक गतिविधियों में इन चीज़ों को जगह दी जाए:

59. परिवर्तन का शिक्षाशास्त्र, जिसमें ट्रान्सफॉरमेटिव लर्निंग शामिल हो और विद्यार्थी अपनी सीमाओं से पार जाना सीखें;

60. विविधता का शिक्षाशास्त्र (Pedagogy of diversity) - जो बच्चों की व्यक्तिगत लर्निंग शैली के प्रति संवेदनशील हो और उनकी विभिन्न जरूरतों पर ध्यान दे। ऐसा शिक्षाशास्त्र जो संवादपरक हो और सिर्फ़ एक 'ज्ञान' को नहीं बल्कि ज्ञान के विभिन्न रूपों को शामिल करता हो तथा बहुत सारे शिक्षाशास्त्रीय और मूल्यांकन मॉडल अपनाए;

61. जागरूकता का शिक्षाशास्त्र (Awareness pedagogy) एक प्रक्रिया है जिसमें आत्म-सजगता, आत्मसंयम और आत्म-साक्षात्कार (Self-actualization) के साथ अपने परिवेश और अपने आप को देखने की प्रक्रिया शामिल है;

62. दायित्व का शिक्षाशास्त्र (Pedagogy of responsibility) – जिसका लक्ष्य है विद्यार्थियों द्वारा अपनी स्वतंत्रता और दुनिया में अपनी भूमिका की खोज;

63. मानवता और तमाम जीव-जंतुओं के लिए प्रेम की शिक्षा। सम्मान, प्रेम और परवाह के साथ सोचना और काम करना सीखना, विद्यार्थी को रोज़ इसका अभ्यास करने की जरूरत है। ग्रेड्स, कॅरियरवाद और आत्मकेंद्रिकता पर आधारित जीवन ढर्रे से लड़ने के लिए होल कम्युनिटी अप्रोच की जरूरत है;

64. जीवन का शिक्षाशास्त्र, जिसका उद्देश्य है अमन की संस्कृति और जीवन के एक दर्शन का निर्माण करना ताकि इस छोटे से ग्रह पर मौजूद साझे जीवन बचाया जा सके, जिसे हमें भावी पीढ़ियों को सौंपना ही होगा;

65. एक गतिविधि आधारित शिक्षा और अनुभवजन्य शिक्षाशास्त्र अपनाया जाए, जो औपचारिक दायरे के भीतर और अक्सर बाहर घटित होने वाली बच्चों की गतिविधियों और उनके जीवन अनुभवों पर आधारित हो;

66. एक ऐसा शिक्षाशास्त्र जो मुश्किलों से भरी इस दुनिया में उद्देश्यपूर्ण जीवन जीने और हिम्मत से कठिनाइयों का सामना करने के लिए विद्यार्थियों को परस्पर विरोधी स्थितियों और विचारों से सीखना और तनावों को पहचानना सिखाए। समाज में मौजूद दबावों और हानिकारक नीतियों का सामना करने के लिए साहस के साथ-साथ संघर्ष करने का जज़्बा ज़रूरी है। ख़ुद अपने पूर्वाग्रहों और आदतों को पहचानने और उनसे लड़ने के लिए भी इस साहस की जरूरत होती है;

67. अर्थनिर्माण का एक ऐसा शिक्षाशास्त्र, जिससे विद्यार्थियों को समीक्षा व तर्कशील खोजबीन के सहारे अर्थ ढूंढने और व्यक्तिगत तथा सामाजिक तौर पर निर्मित मूल्यों की एक प्रणाली तैयार करने में मदद मिले;

68. पर्यावरण का शिक्षाशास्त्र (Pedagogy of environment) - क्योंकि शिक्षा एक सामाजिक, सांस्कृतिक और भौतिक वातावरण में ही रूप लेती है;

69. अध्ययन कार्यक्रमों में एक्स्ट्रा कैरिकुलर और अनौपचारिक लर्निंग का इस्तेमाल किया जाए, ताकि शैक्षिक अनुभव और समृद्ध हों;

70. विद्यार्थियों के बीच परस्पर लर्निंग और पीयर ग्रुप असेस्मेंट का शिक्षाशास्त्र अपनाया जाए। इसके मुताबिक अध्यापक और विद्यार्थी मिलकर सीखने का प्रयास करें और अध्यापक भी विद्यार्थियों से सीखने के लिए उन्मुक्त रवैया रखें;

71. क्षितिजों का शिक्षाशास्त्र : संस्कृतियों के बीच विचारों और दृष्टिकोणों के आदान-प्रदान के रूप में संस्कृतियों पर बातचीत, जिससे गलतफहमियां दूर हों तथा रूढ़छवियों और पूर्वाग्रहों से मुकाबला करने में मदद मिले, ख़ासतौर पर अंतर्धार्मिक संवाद के सन्दर्भ में;

72. एक ऐसी आलोचनात्मक डिजिटल शिक्षा, जिसमें बच्चों और नौजवानों को ये पढ़ाया जा सके कि वे सूचनाओं को फ़िल्टर कैसे करें, डेटा की व्याख्या कैसे करें, सोशल नेटवर्कों तथा विज्ञापनों के माध्यम से मिलने वाली सूचना के मूल्यांकन के लिए सूचना एल्गोरिदम को कैसे समझें। ताकि वे बरगलाए जाने से बच सकें;

73. विद्यार्थियों में कल्पनाशीलता और सौंदर्य-बोध पैदा करने के लिए खेलकूद, तथा विजुअल और प्रदर्शनमूलक गतिविधियां अपनाई जाएँ। विद्यार्थियों को ये सिखाया जाए कि वे तस्वीरों को न केवल सूचना के रूप में, बल्कि एक सांस्कृतिक सच्चाई के रूप में भी देखें और ये समझें कि तस्वीरों के सम्मोहन पर क्या रवैया अपनाएं;

74. पढ़ाने के तरीकों और बच्चों की उपलब्धियों को मापने के गैर-आक्रामक तरीके अपनाए जाएं। सार्वजनिक रैंकिंग और योगात्मक मूल्यांकनों (Summative Judgements) से यथासंभव बचें क्योंकि ऐसी

पद्धतियाँ बच्चों का हौसला तोड़ती हैं, ख़ासतौर पर विकास के शुरुआती सालों में;

75. इस बात के लिए लोगों को प्रोत्साहित करें कि विद्यार्थियों के मूल्यांकन का बड़ा हिस्सा सामाजिक, भावनात्मक, नैतिक, नागरिक, सांस्कृतिक/पर्यावरणीय संवेदनशीलता जैसे मानवीय आयामों पर आधारित हो। जो रचनात्मक मूल्यांकन के तौर पर काम करे और दूसरों से तुलना की बजाय छात्र की अपनी उपलब्धि को बताए।

शिक्षा के विभिन्न स्तरों पर इन सिद्धांतों और विचारों को लागू करने के लिए हमें काम करने के ख़ास तरीके अपनाने होंगे।

प्राथमिक शिक्षा / प्री-स्कूल एवं प्राइमरी स्कूल शिक्षकों को चाहिए कि वे:

76. हर बच्चे को सुनने और उसकी परवाह करने का रवैया अपनाएं। बच्चे के विकास के लिए, ख़ासतौर से उसके व्यक्तित्व के विकास के लिए एक ख़ास माहौल तैयार करें;

77. बच्चों में उन्मुक्तता पैदा करें। उनमें प्रतिक्रियाशीलता, हमदर्दी, परवाह और प्रकृति के प्रति निकटता का भाव विकसित करें। ऐसी परिस्थितियां तैयार करें जिनमें वे मिलजुलकर अपनी, एक-दूसरे की और इस ग्रह की परवाह करना सीखें;

78. मनुष्यों, जीव-जंतुओं, प्रकृति और तकनीक के संबंध में मानवीय व्यवहार के उदाहरण पेश करें;

79. प्रयोगधर्मी शिक्षा के ज़रिए और विभिन्न गतिविधियों में शामिल होकर बच्चों को उनकी स्थानीय जगहों तथा उनके समुदायों से जोड़ें;

80. बच्चों को रचने, समझने-बूझने और खोजने के लिए प्रोत्साहित करें मगर उन्हें गलतियां करने की छूट दें;

- **माध्यमिक शिक्षा** / शिक्षकों को चाहिए कि वे:

81. सबसे असुरक्षित समूहों को उनके सीखने के सफ़र, उनकी सामाजिक प्रगति और उनके रास्ते में आने वाली असमानताओं को पार करने में मदद करें;

82. औपचारिक और अदृश्य पाठ्यक्रम को कौशल प्रशिक्षण तथा रोजगार की तैयारी की बजाय मानसिक, व्यक्तिगत, सामाजिक एवं नागरिक विकास की ओर मोड़ने पर जोर दें;

83. एक ऐसी मूल्यांकन व्यवस्था तैयार की जाए जो प्राथमिक तौर पर शैक्षिक उद्देश्यों को पूरा करे और विद्यार्थियों के पूर्ण विकास में सहायक हो;

84. गतिविधियों के जरिये उम्मीद का ऐसा बोध विकसित किया जाए, जिससे बच्चे अपने इलाके और समुदायों के साथ गहरा जुड़ाव रखते हुए बड़े हों और उन्हें मालूम हो कि वे लोगों, पौधों, पशुओं, कीट-पतंगों और जीवन के तमाम रूपों के लिए हमेशा कुछ कर सकते हैं;

85. अपने समुदाय के महत्त्वपूर्ण सदस्यों और उसमें योगदान करने वाले व्यक्तियों के रूप में बच्चों की परवाह करें और उन्हें सम्मान दें। उनकी बातों को सुनें और विचारों का स्वागत करें;

86. समस्याओं के प्रति अपने दृष्टिकोण को राष्ट्रीय से आगे बढ़ाते हुए वैश्विक परिप्रेक्ष्य तक ले जाएँ;

87. प्रत्येक विद्यार्थी को साझे हितों और मानवाधिकारों का सम्मान करना सिखाएं और लोकतांत्रिक सांगठनिक मॉडल व सिस्टम्स से जोड़ें;

88. विद्यार्थियों को साइबरनेटिक्स, इंटरनेट और सोशल नेटवर्कों का सोच-समझकर इस्तेमाल करने की आदत डालें; उन्हें छानबीन करना, अर्थ खोजना और चीजों को परस्पर जुड़ाव में देखना सिखाएं, ख़ासतौर पर अपने प्रसंग में;

89. निरीश्वरवादियों (Agnostic) और नास्तिकों सहित सभी प्रकार की नृजातीय एवं धार्मिक विविधता का सम्मान करें।

आगे की शिक्षा / शिक्षकों को क्या करना चाहिए:

90. श्रम के सभी रूपों को सम्मान दें और बौद्धिक, अनुभवजन्य तथा प्रायोगिक शिक्षण के बीच मौजूद कृत्रिम भेद को चुनौती दें;
91. सुनिश्चित करें कि विद्यार्थी वोकेशलन कौशल के बौद्धिक, सामाजिक और नैतिक आयाम को समझते और सराहते हैं;
92. विद्यार्थियों को अपनी वोकेशनल शिक्षा के परिप्रेक्ष्य में आलोचनात्मक ढंग से सोचने के लिए तैयार करें;
93. विद्यार्थियों को अपने काम में निजी और सार्वजनिक सार्थकता को पहचानने में मदद करें;

उच्च शिक्षा / फैकल्टी को चाहिए कि वे:

94. उच्च शिक्षा के लिए ऐसी नैतिकता का विकास करें जो भू-राजनीति और बड़ी कंपनियों से स्वतन्त्र हो और समाजों, मानवता तथा पृथ्वी की दूसरी प्रजातियों के कल्याण के लिए समर्पित हो;
95. विद्यार्थियों में तथाकथित तौर पर वस्तुनिष्ठता के सिद्धांत से निकली तटस्थता न पैदा करें, बल्कि उनमें अपने जीवन और समाज के प्रति दायित्व का सचेत बोध पैदा करें। उन्हें यह सोचना भी सिखाएं कि वे अपने ज्ञान से कैसे फायदे या नुकसान पहुंचा सकते हैं;
96. विद्यार्थियों में आलोचनात्मकता पैदा करें ताकि वे सामने मौजूद किसी भी रुपरेखा या विचार को चुनौती देने में सक्षम हों। उन्हें अध्ययन के प्रत्येक कार्यक्रम को सारी दुनिया के साथ जोड़कर देखने योग्य बनाएं और उनमें ऐसी क्षमताओं का विकास करें कि जटिल मामलों को सुलझाने में समाज की मदद करने के लिए उन्हें सही जगह मिले;

97. ऐसी पाठ्यचर्या तथा शोध गतिविधियां अपनाएं, जिन्हें अंतर-अनुशासनिकता और धरती पर जीवन के तमाम रूपों के टिकाऊपन के इर्द-गिर्द तैयार किया गया हो तथा संसार के व्यापक हितों पर आधारित हों;

98. एक ऐसा अकादमिक समुदाय विकसित करें जिसके अपने मूल्य हों, जो अपने साथ-साथ सभी समाजों की आजादी से सरोकार रखता हो, जिसके पास यह क्षमता हो कि दृष्टिकोणों की भिन्नता के बावजूद सामूहिक निर्णय ले सकता हो;

वयस्क एवं सामुदायिक शिक्षा/शिक्षकों को चाहिए कि वे:

99. आजीवन शिक्षा (Lifelong education) को प्रोत्साहन दें और वह सभी वयस्कों के लिए जीवन भर आसानी से उपलब्ध हो;

100. समाज, ख़ासतौर पर नागरिक समाज के साथ रिश्तों और व्यक्तिगत भागीदारी के दायरे को विस्तार दें;

101. सांस्कृतिक एवं राजनीतिक शिक्षा के साथ-साथ दार्शनिक, मनोवैज्ञानिक, समाजशास्त्रीय, वैज्ञानिक एवं सांस्कृतिक मामलों की चर्चा शामिल करें और वयस्कों को अपने जीवन का अर्थ स्पष्ट करने में मदद करें;

102. पीढ़ियों के बीच संवाद को बढ़ावा दें। वयस्कों में अपनी दुनिया, समाज व आने वाली पीढ़ियों के प्रति ज़िम्मेदारी का भाव पैदा करें और उन्हें शिक्षा में भागीदारी के लिए तैयार करें;

103. समुदाय के कल्याण और लोकतंत्र को बढ़ावा देने के लिए नागरिक समाज संगठनों की क्षमताओं का विकास करें;

104. वैश्विक समस्याओं के प्रति सामूहिक सरोकार पैदा करें और उनके समाधानों में सामुदायिक भागीदारी को बढ़ावा दें;

गैर-औपचारिक शिक्षा को चाहिए कि वह:

105. ऐसा माहौल तैयार करें जो पदानुक्रम की बजाए सह-अस्तित्व में व्यक्तियों और समुदायों के ज्ञान को स्वीकारे और उनसे सीखे;

106. स्कूल के भीतर और बाहर ऐसा शैक्षिक माहौल तैयार करें जो शिक्षा को वैकल्पिक दृष्टिकोणों की ओर ले जाने में सहायक हो;

107. विभिन्न सामाजिक समूहों, ख़ासतौर पर अलग-अलग पीढ़ियों और अंतर-सांस्कृतिक समूहों के बीच आदान-प्रदान के लिए शहरों में संवाद के सार्वजनिक दायरे तैयार करें;

108. वंचित आबादियों, ख़ासतौर पर एशियाई, अफ्रीकी और लैटिन अमेरिकी समुदायों की जरूरतों का ध्यान रखें तो औपचारिक शिक्षा में सामाजिक सहायता के अलावा शिक्षा में निम्न चीजें शामिल होनी चाहिए:

- स्थानीय ज्ञान एवं संस्कृति के संबंध में अनौपचारिक शिक्षा के साथ-साथ मानवीय आत्म-चेतना (स्वाभिमान, मूल्य, सुख का बोध); सामाजिक, नागरिक चेतना; सांस्कृतिक चेतना (राष्ट्रीय संस्कृति, विश्व संस्कृति); पारिस्थितिकीय जागरूकता और वैज्ञानिक तौर पर समृद्ध आधुनिक विश्व-दृष्टि शामिल हो; उनमें अपने समुदाय और आजीविका की रक्षा के लिए एक्टिविज़्म हो तथा उन्हें ऐसी शिक्षा दी जाए जिससे अपना प्रतिनिधित्व करने के लिए उन्हें दूसरों की ज़रूरत न पड़े;
- बच्चों, युवाओं और वयस्कों के लिए भी प्री-स्कूल से विश्वविद्यालय तक के गैर-औपचारिक शैक्षिक कार्यक्रम हों। ये कार्यक्रम टेक्स्ट, विजुअल और ऑडियो जैसे विभिन्न रूपों में सस्ते फोन पर उपलब्ध होने चाहिए।

III. प्रस्तावित कार्य पद्धतियां एवं क्रियाएं

हम शिक्षा के नीति निर्धारकों से आह्वान करते हैं कि वे इन शैक्षिक मूल्यों, लक्ष्यों और आदर्शों को अपनाएं। हम शिक्षा संस्थानों एवं शिक्षाविदों से अपील करते हैं कि वे नई कल्पनाशील टीचिंग-लर्निंग पद्धतियों के ज़रिए इन मूल्यों, लक्ष्यों और आदर्शों को जीवन्तता प्रदान करें, ताकि विद्यार्थियों को इस मुश्किल दुनिया में अपनी पूरी मानवीय क्षमताएं हासिल करने में मदद मिल सके। इसके साथ ही हम राजनीतिज्ञों, व्यवसायियों, सांस्कृतिक एवं सार्वजनिक जगत में सक्रिय लोगों, फाउण्डेशनों, गैर-सरकारी संगठनों व अन्य संस्थानों से भी अपील करते हैं कि वे अपनी साझा ज़िम्मेदारियों को पहचानें, अपनी भागीदारी के बारे में सोचें और समूची मानवता की शिक्षा के लिए अपना योगदान दें। हम सरकारों, राष्ट्रीय निकायों, वित्तीय संस्थानों, स्थानीय समुदायों और मीडिया के स्तर पर कार्रवाई की मांग करते हैं।

हम आशा करते हैं कि यह घोषणापत्र शैक्षिक और सार्वजनिक बहसों में मददगार होगा और जहाँ भी शिक्षा के प्रयास किये जा रहे हैं, वहां शिक्षा की पुनर्कल्पना और समृद्धि के हित में काम करने के लिए लोगों को प्रोत्साहित करेगा। हम आशा करते हैं कि सरकारें, अन्य प्रमुख संस्थान और सत्ता केंद्र इस दस्तावेज़ में प्रतिबिंबित होने वाली ज़िम्मेदारियों और संभावनाओं को पहचानेंगे और उस पर विचार करेंगे।

यहाँ हमने एक ऐसी शिक्षा की धारणा पेश की है, जो पनप रही है, यह उन नए विचारों और व्यवहारों के लिए भी पूरे लचीलेपन के साथ खुली है जो अभी आने वाले हैं। हमारा मानना है कि तीसरी सहस्राब्दी के लिए शिक्षा के रूपांतरण की इस रचनात्मक प्रक्रिया में शिक्षा जगत के प्रत्येक व्यक्ति को शामिल होना चाहिए।

परिशिष्ट

यह घोषणापत्र 'तीसरी सहस्राब्दी में मानवीय शिक्षा' शीर्षक अंतर्राष्ट्रीय कार्यक्रम की रूपरेखा के तहत तैयार किया गया है।

2019 से 2024 के बीच इस घोषणापत्र और इसके विचारों को रूप देने की प्रक्रिया में 79 देशों के विद्वानों और शिक्षाविदों ने भागीदारी की है।

एशिया
अफ़ग़ानिस्तान, इज़राइल, ईरान, उज़बेकिस्तान, ओमान, कज़ाकिस्तान, क़तर, जापान, ताइवान, दि वेस्ट बैंक, नेपाल, पाकिस्तान, फ़िलिस्तीन राज्य, बांग्लादेश, भारत, मंगोलिया, मलेशिया, यमन सऊदी अरब।

यूरोप

आयरलैंड, इटली, ऑस्ट्रिया, ग्रीस, चेक रिपब्लिक, जर्मनी, तुर्की, पुर्तगाल, पोलैंड, फिनलैंड, फ्रांस, बुल्गारिया, युनाइटेड किंगडम, यूक्रेन, रूस, स्लोवेनिया, स्वीडन।

अफ्रीका

अंगोला, अल्जीरिया, इथियोपिया, कीनिया, कैमरून, कोट-डी-आइवरी, गेबॉन, चाड, ट्यूनीशिया, डीआरसी, तंज़ानियां, दक्षिण अफ्रीका, नाइजर, नाइजीरिया, नामीबिया, मिस्र, मेडागास्कर, मोज़ांबीक, मोरक्को, सेनेगल।

ओशयानिया

ऑस्ट्रेलिया, न्यूज़ीलैंड, पापुआ न्यूगिनी, फिजी, फिलीपींस, सोलोमन आईलैंड्स, हवाई।

उत्तरी, मध्य एवं दक्षिणी अमेरिका

अर्जेंटीना, इक्वेडोर, उरूग्वे, एल सल्वाडोर, कनाडा, कोलंबिया, ग्वाटेमाला, चिली, निकारागुआ, पनामा, पेरागवे, पेरू, बेलीज़, ब्राज़ील, मैक्सिको, संयुक्त राज्य अमेरिका, होंडुरास।

अंतर्राष्ट्रीय ड्रॉफ्टिंग कमेटी के सदस्य

रोनाल्ड बारनेट (लंदन, यूके), टीमो आइराक्सिनेन (हेलसिंकी, फिनलैंड) वॉल्टर कोहान (रियो डे जिनेरियो, ब्राज़ील), पूनम बत्रा (दिल्ली, भारत), स्कॉट वेब्स्टर, (मेलबोर्न, ऑस्ट्रेलिया), कैथलीन लिंच (डबलिन, आयरलैंड), फेलिक्स मारिंज (जोहानेसबर्ग, दक्षिण अफ्रीका), जॉन वीवर (स्टेट्स बोरो, अमेरिका), एनरीक मार्टिनेज़ लारेचा (मोंटेवीडियो, उरूग्वे), यूसुफ वागहीड (स्टेलेन बॉश, दक्षिण अफ्रीका), यिर्गा गेलॉ वोल्डेज (पर्थ, ऑस्ट्रेलिया), राजश्री श्रीनिवासन (बेंगलूरु, भारत), मार्गरिटा कोचेवनिकोवा (सेंट पीटर्सबुर्ग, रूस)।